

हरिकथामृतसार
अणुतारतम्य संधि

हरिकथामृतसार गुरुगळ करुणधिम्धापनिथु पेळुवे
परम भगवधभक्थरिधनाधरधि केळुवुधु

विष्णुसवोत्तमनु प्रकृति क
निष्टळनिपळानंत गुण पर
मैष्टि पवनरु कडिमे वाणी भारतिगळधम
विष्णुवाह फणींद्र मृडरिगे
कृष्णमहिषियरध मरिवरोळु
श्रेष्टळेनिपळु जांबवतियावेषबलदिंद २९-०१

प्लवग पन्नगपाहिभूषण
युवतियरु सम तम्मोळगे जां
बवतिगिंतलि कडिमे इवरिदिंद्रकामरिगे
अवर प्राणनु कडिमे कामन
कुवर शचि रति दअ गुरु मनु
प्रवहमारुत कोरतेयेनिसुवनारु जनरिंद २९-०२

यम दिवाकर चंद्र मानवि
समरु कौणप प्रवहगधमरु
द्युमणिगिंतलि वरुण नीचनुनारदाधमनु
सुमनसास्य प्रसूति भृगुमुनि
समरु नारदगधमरत्रि
प्रमुख विश्वामित्र वैवस्वतरनलगधम २९-०३

मित्र तार निरऋति प्रवह
पत्नि प्रावहि समरु विश्वा
मित्रगिंतलि कोरते विश्वक्सेन गणनाथा
वित्तपति अश्विनिगळधमरु

मित्र मोदलादवरिगितलि
बित्तरिपेनु शतस्थ दिविजर व्यूहनामगळ २९-०४

मरुतरोंभत्तधिक नाल्व
तेरडु अश्विनि विश्वेदेवरु
एरडेदु हन्नोदु ऋद्ररु द्वादशादित्य
गुरु पितृउन्नयवष्टवसुगळु
भरत भारति पृथ्वि ऋभुवें
दरिवुदिवरनु सोमरसपानाहरहुदेंदु २९-०५

ई दिवौकसरोळगे उक्तरु
ऐदधिकदश उळिद एंभ
तैदु शैषरिगेणेयेनिसुवरु धनप विनायकरु
साधु वैवस्वत स्वायंभुव
श्रीद तापसरुळिदु मनु ऐ
कादशरु विघ्नेशगितलि नीचरेनिसुवरु २९-०६

च्यवननंदन कवि बृहस्पति
अवर जनु चथ्यमुनि पावक
ध्रुव नहुष शशिबिदु प्रियव्रतनु प्रह्लाद
कुवलयपरुक्तेतरिदलि
अवर रोहिणि शामला जा
न्हवि विराट्पजन्य संज्झन्यादेवियरु अधम २९-०७

द्युनदिगितलि नीचरेनिपरु
अनभिमानि दिवौकसरु के
चनमुनिगळिगे कडिमे स्वाहादेविगधम बुध
एनिसुवळुषादेवि नीचळु
शनि कडिमे कमाधिपति स
द्विनुत पुष्कर नीचनेनिसुव सूयनंदनगे २९-०८

कोरतेयनिपरशीति ऋषि पु
ष्करगे ऊवशि मुख्य शत अ
प्सररु तुंबुरमुखरु अजानजरेनिसुतिहरु
करेसुवदु अनलगण नाल्व
तरे चतुदश द्ब्यष्ट साविर
हरिमडादियरु समरेनिसुवरु पिते पौळ्दिरिगे २९-०९

तदवरर नाक्यात अप्सर
सुरतियरु कृष्णांगसंगिग
गळदर तरुवायदलि चिरपितरुगळु इवरिद
त्रिदश गंधवगण इवरि
दधम नरगंधवरिवरि
दुदधिमे खळपतिगळधमरु नूरु गुणदिंद २९-१०

पृथ्विपतिगळिगिंत शत मनु
जोत्तमरु कडिमेनिपरिवरि
दुत्तरोत्तर नूरु गुणदिंदधिकरादवर
नित्यदलि चिंतिसुत नमिसुत
भृत्य नानहुदेंब भक्तर
चित्तदलि नेलेगोंडु करुणिपरखिळसौख्यगळ २९-११

द्रुम लता तृण गुल्म जीवरु
क्रमदि नीचरु इवरिगिंता
धमरेनिसुवरु नित्यबद्धरिगिंतलज्झन्यानि
तमसिग्योग्यर भृत्यरधमरु
अमरुषाद्यभिमानि दैत्यरु
नमुचि मोदलादवरिगिंतलि विप्रचितिति नीच २९-१२

अलकुमियु ता नीचळेनिपळु
कलि परमनीचतमनवनिं
दुळिद पापिगळिल्लु नौडलु ईजगत्त्रयदि

मलविसजनकालदलि क
तलेयोळगे कश्मल कुमाग
स्थळगळलि चिंतनेय माळपुदु बल्लवरु नित्य २९-१३

सत्वजीवर मानि ब्रह्मनु
नित्यबद्धरोळगे पुरंजन
दैत्य समुदायाधिपति कलियेनिप पवमान
नित्यदलि अवरोळगे कमप्र
वतकनु तानागि श्रीपुरु
षोत्तमन संप्रीति गोसुग माडि माडिसुव २९-१४

प्राणदेवनु त्रिविधरोळगे प्र
वीण तानेदेनिसि अढिका
रानुसारदि कमगळ ता माडि माडिसुव
ज्झन्यान-भक्ति सुरगे मिश्र
ज्झन्यान मध्यम जीवरिगे अ
ज्झन्यान मोह द्वेषगळ दैत्यरिगे कोडुतिप्प २९-१५

देवदैत्यर तारतम्यव
नी विधदि तिळिदेल्लरोळु ल
मीवरने सर्वोत्तमनु एंदरिदु नित्यदलि
सेविसुव भक्तरिगोलिदु सुख
वीव सवत्रदलि सुखमय
श्री विरिंचाद्यमरनुत जगन्नाथ विठ्ठलनु २९-१६